INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 4, April 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

"स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और सृजनात्मक क्षमता के बीच सम्बन्धों का अध्ययन"

*दीप्ति मिश्रा
** प्रो0 (डॉ0) अंशू त्रिपाठी
*दीप्ति मिश्रा, (शोध छात्रा), कामता प्रसाद सुंदरलाल साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या (उत्तर प्रदेश)
Email- mishradeepti1611@gmail.com
** प्रो0 (डॉ0) अंशू त्रिपाठी, प्रोफेसर, कामता प्रसाद सुंदरलाल साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनशीलता की क्षमता के बीच पाये जाने वाले पारस्परिक सम्बन्धों का अनुभवजन्य विश्लेषण करना है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक उपलब्धि केवल परीक्षा के अंकों, ग्रेडों अथवा प्रमाणपत्रों तक सीमित नहीं होती है बल्कि छात्र–छात्राओं के ज्ञान, समझ, तर्क, समस्या समाधान क्षमता और व्यवहारिक कुशलता के समग्र विकास के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसी प्रकार छात्र–छात्राओं में सृजनशीलता की क्षमता को केवल साहित्य या कला तक सीमित न मानकर उसके नवाचार की क्षमता कल्पना शक्ति एवं नवीन विचारों के सृजन के रूप में स्वीकार किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि जब शिक्षा प्रणाली छात्र केन्द्रित एवं समस्या समाधान पर आधारित होती है। तो छात्र–छात्राओं में अन्तर्निहित सृजनात्मक क्षमता प्रदर्शित होती है। जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सुधार होता है। एक ऐसा शैक्षिक वातावरण जो स्वतन्त्र चिन्तन, प्रयोग, समूह गतिविधियों, नवाचार और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करते है तो छात्र–छात्राओं में सृजनशीलता की क्षमता विकसित होती है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सृजनशीलता छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में गुणात्मक सुधार लाती है। जबकि प्रभावी शिक्षा व्यवस्था सृजनशीलता के विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करता है। इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि और सृजनशीलता दोनों एक दूसरे के पूरक और सहयोगी है।

मुख्य शब्द– स्नातक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि, सृजनशीलता, मनोवैज्ञानिक विकास

1. प्रस्तावना

शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता दोनों ही मनोवैज्ञानिक चर है तथा दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते है। जिन छात्र–छात्राओं की बुद्धि का स्तर उच्च होता है उनमें या दोनों चर उच्च स्तर पर पाये जा सकते है। यह दोनों चर एक दूसरे के पूरक एवं सहयोगी है और दोनों चरों में एक ही दिशा में परिवर्तन होता है। यदि एक में वृद्धि होगी तो स्वाभाविक रूप से दूसरे चर में वृद्धि की प्रवृत्ति पायी जायेगी तथा एक चर में कमी दूसरे चर को भी निम्न स्तर की ओर ले जाती है।

1.1. शैक्षिक उपलब्धि (Educational Achievement)

शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय किसी निश्चित समय अवधि में ज्ञानार्जन के प्रतिकूल से लगाया जाता है जिससे छात्र–छात्राओं के ज्ञान, कौशल तथा दक्षता में वृद्धि होती है। बालक के शैक्षिक उपलब्धि का उच्च स्तर उसके कार्य की गुणवत्ता को उच्च बनाता है तथा बालक के जिज्ञासा और कार्य के प्रति उत्साह में वृद्धि करता है। इसके विपरीत शैक्षिक उपलब्धि का निम्न स्तर छात्र–छात्राओं को किसी कार्य के प्रति हतोत्साहित करता है।

गैरीसन व अन्य के अनुसार, "उपलब्धि परीक्षण बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मूल्यांकन करती है।"

इबेल के अनुसार, "उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है जो विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान, कुशलता या क्षमता का मापन करता है।"

थार्नडाइक व हेगन के अनुसार, "जब हम उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग करते है। तब हम इस बात का निश्चय करना चाहते है कि एक विशिष्ट प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त व्यक्ति ने क्या सीखा है।"

करलिंगर के अनुसार, "शैक्षिक उपलब्धि किसी परीक्षा या परीक्षण में छात्र–छात्राओं द्वारा अर्जित प्राप्तांकों या ग्रेड से होता है उसे शैक्षिक उपलब्धि कहते है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि शैक्षिक उपलब्धि छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मापन एवं मूल्यांकन है तथा वर्तमान परिवेश में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जिसका विभिन्न स्तरों पर प्रवेश एवं नियुक्ति (भर्ती) के लिए प्रयोग किया जाता है।

1.2. सृजनात्मकता (Creativity)

छात्र–छात्राओं के द्वारा किसी समस्या का विद्वतापूर्ण ढंग से समाधान करने की क्षमता को सृजनशीलता कहते है। जो छात्र–छात्राओं में विभिन्न विशेषताओं जैसे–समस्या के प्रति सजगता, गतिशीलता, लचीलापन, मौलिकता, जिज्ञासा, नवीनता, वैचारिकता, तर्कपूर्णता, परिवर्तन लाने के आकांक्षा आदि के माध्यम से रचनात्मकता उत्पन्न करना है। सृजनात्मकता शब्द रचनात्मकता, उत्पादकता, मौलिकता, विधायकता, आदि शब्दों के पर्यायवाची के रूप में प्रयोग होता है यह प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं का एक विशिष्ट प्रकार होता है। जिसमें अपसारी चिंतन (Convergent thinking) की प्रधानता होती है।

आसुबेल के अनुसार– "सृजनात्मकता बालक के बौद्धिक योग्यताओं, व्यक्तित्व चरों तथा समस्या समाधान, लक्षणों की सामान्यीकरण की शक्ति को कहते है।"

बैरन के अनुसार–"सृजनात्मक बालक पहले से विद्यमान वस्तुओं तथा तत्वों को संयुक्त कर नवीन निर्माण करता है।"

एन. इसरेली के अनुसार–"सृजनात्मक बालक किसी नवीन वस्तु का निर्माण एवं परिवर्तन करने की क्षमता रखता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन से स्पष्ट है कि सृजनात्मकता छात्र–छात्राओं की एक ऐसी विशिष्ट योग्यता है जो उनके व्यवहार में लचीलापन एवं नवीनता का संचार करता है। सृजनशील बालक अपने वातावरण में हमेशा वास्तविकता एवं सत्य की खोज करता रहता है। ऐसे बालक अधिक सामाजिक होते है तथा सामाजिक परिवेश के प्रति अधिक संवेदनशील होते है।

सृजनशील बालकों की पहचान उनकी कार्यशैली, बुद्धिमापन, व्यक्तित्व परीक्षण तथा उपलब्धि परीक्षण के माध्यम से किया जा सकता है। ऐसे छात्र–छात्राओं की शिक्षा के लिए शिक्षण प्रतिमान, शिक्षण तकनीकि, पाठ्यक्रम, शैक्षिक साधन एवं उपकरणों की व्यवस्था इस प्रकार किया जाता है कि इन बालकों में सृजनात्मक क्षमता एवं योग्यता में वृद्धि हो सके।

2. सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण से अभिप्राय शोध समस्या के क्षेत्र में हो चुके अब तक के शोधों का अध्ययन करना होता है। जिससे शोध करने वालों की समय एवं धन की बचत होती है। तथा अनावश्यक दोहराव से मुक्ति प्राप्त होती है। सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण के अन्तर्गत अनुसंधान समस्या से सम्बन्धित विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबन्धों, अभिलेखों, ज्ञानकोषों, सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी समितियों एवं आयोगों के रिपोर्टों तथा सरकार के विभिन्न विभागों, एवं मंत्रालयों के प्रकाशनों आदि के अध्ययन के द्वारा शोध से सम्बन्धित समस्या निर्धारण एवं सीमांकन में सहायता प्राप्त होती है। शोधार्थिनी के द्वारा अपनी शोध समस्या से सम्बन्धित किये गये साहित्य सर्वेक्षण का विवरण निम्न है।

मिश्रा दुर्गेश कुमार (2016) ने अपने शोध "सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर अपना शोध कार्य किया। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस शोध अध्ययन में स्तरीकृत या यादृच्छिक चयन विधि से कुल 200 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया जिनसे प्राप्त सूचनाओं का सांख्यिकीय तकनीकि से विश्लेषण किया गया जिससे निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की अपेक्षा गैर सरकारी विद्यालयों की छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

पटेल, केशवराव (2012) ने "अभिभावकों के शैक्षिक अभिवृत्ति का हाईस्कूल स्तर पर उनके पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव" विषय पर अपना अध्ययन किया। इस अध्ययन में कुल 200 विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके अभिभावकों के शैक्षिक अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन किया गया। इनसे सम्बन्धित प्राप्त सूचनाओं का सांख्यिकीय विधि से विश्लेषण किया गया। जिसके आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अभिभावकों के शैक्षिक अभिवृत्ति का छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। जिन अभिभावकों की शैक्षिक अभिवृत्ति सकारात्मक है उनके पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक है तथा जिन अभिभावकों की शैक्षिक अभिवृत्ति ऋणात्मक है, उनके पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न है।

प्रचेता, राजेश कुमार (2011) ने "उच्च और निम्न समायोजन वाले खिलाड़ियों की शैक्षिक उपलब्धि" विषय पर अनुसंधान कार्य किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्नातक स्तर पर अध्ययनरत उच्च और निम्न समायोजन वाले खिलाड़ियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था यह अध्ययन आजमगढ़ जनपद से सम्बन्धित है। इसके अंतर्गत कुल 100 छात्र–छात्राओं का अध्ययन किया गया। जिनका चुनाव स्नातक स्तर पर अध्ययन करने वाले खिलाड़ी छात्र–छात्राओं में से स्तरीकृत, यादृच्छिक न्यादर्श चयन प्रणाली के माध्यम से किया गया। इस अध्ययन में प्राप्त सूचनाओं का उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों से विश्लेषण किया। इस अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कम समायोजन दक्षता वाले खिलाड़ियों की तुलना में अधिक समायोजन दक्षता वाले खिलाड़ियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

राधेश्याम (2007) ने "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनशीलता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। जिसका उद्देश्य माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की सृजनशीलता और उनकी शैक्षिक उपलब्धि में पाये जाने वाले सम्बन्धों का अध्ययन करना था इस अध्ययन में प्राप्त सूचनाओं का मध्यमान मानक विचलन और टी–परीक्षण के माध्यम से विश्लेषण किया गया। जिससे यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विद्यार्थियों की सृजनशीलता और उनके शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते है कि सृजनशीलता बालकों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करती है।

मौर्या, सुभाषिनी (2007) ने "उच्च सृजनशील तथा निम्न सृजनशील छात्र–अध्यापकों के कक्षा शिक्षण के व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर अपना शोध कार्य किया। इस शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च सृजनशील तथा निम्न सृजनशील छात्राध्यापकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस अध्ययन में B.Ed में अध्ययनरत 300 छात्राध्यापकों के व्यवहारों का अध्ययन किया गया। जिसमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि छात्राध्यापकों के शिक्षण व्यवहार उनके सृजनशीलता से प्रभावित होते है। दूसरे शब्दों में अधिक सृजनशील कक्षा अध्यापक का शिक्षक व्यवहार अधिक कुशल पाया गया। इस प्रकार स्पष्ट है कि सृजनशीलता और कक्षा शिक्षक व्यवहार में प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध पाया जाता है।

उपर्युक्त शिक्षाशास्त्रियों तथा विद्वानों के लेखों, पुस्तकों तथा पत्र पत्रिकाओं का गहन अध्ययन शोधार्थिनी के द्वारा किया गया। जिससे वर्तमान शोध समस्या से सम्बन्धित शोध डिजाइन के निर्माण एवं शोध समस्या के परिसीमन में शोधार्थिनी को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है।

3. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थिनी के द्वारा छात्र–छात्राओं के दो प्रमुख मनावैज्ञानिक विशेषताओं शैक्षिक उपलब्धि और सृजनशीलता के मध्य पाये जाने वाले सम्बन्धों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है जिसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है।

- स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा का अध्ययन करना।
- स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
- स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के सृजनशीलता से सम्बन्धित अवधारणा का अध्ययन करना।
- स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं में सृजनशीलता को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
- स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि और सृजनशीलता के मध्य पाये जाने वाले सम्बन्धों का अध्ययन करना।

4. शोध विधि एवं प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त चर मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के है। इस अध्ययन में केसस्टडी (घटना अध्ययन) शोध विधि का प्रयोग किया गया है। शोध की डिजाइन अथवा कार्ययोजना शोध के क्षेत्र में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटक है। जिससे समय एवं धन की बचत होती है तथा किसी भी कार्य के अनावश्यक दोहराव से बचा जा सकता है। एक उचित कार्य प्रस्ताव पर ही शोध की सफलता निश्चित होती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में द्वितीयक आकड़ों

(Secondary Data) का प्रयोग किया गया है। जिनका संकलन विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबन्धों, विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाशास्त्रियों के शोध अध्ययनों आदि से किया गया है। इन सूचनाओं का उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों के द्वारा विश्लेषण करके निष्कर्ष का प्रतिपादन किया गया है।

5. शैक्षिक उपलब्धि और सृजनशीलता में सम्बन्ध

शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनशीलता यह दोनों मनोवैज्ञानिक चर एक दूसरे से सम्बन्धित है तथा एक दूसरे को प्रभावित करते है। शैक्षिक उपलब्धि बालक के सीखने के परिणाम का मूल्यांकन करता है। इसका प्रमुख उद्देश्य छात्र–छात्राओं द्वारा अर्जित किये गये कुशलता की माप करना है, शिक्षकों के द्वारा किये गये अध्यापन की वैधता की जानकारी प्राप्त करना, छात्र–छात्राओं की सीखने की क्षमता का अन्य छात्र–छात्राओं से तुलना करना, छात्र–छात्राओं के कक्षोन्नति के लिए निर्णय लेने, शिक्षक के शिक्षण विधि में आवश्यक सुधार करने पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता की जांच करने, छात्रों की बौद्धिक विकास का अनुमान लगाने, छात्र–छात्राओं को शैक्षिक निर्देशन, व्यक्तिगत (वैयक्तिक) निर्देशन एवं व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करना तथा छात्र–छात्राओं के अधिगम कौशल एवं सीखने की प्रक्रिया को गति प्रदान करना होता है। शैक्षिक उपलब्धि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। जिसके द्वारा छात्र–छात्राओं को ग्रेड या अंक प्रदान किया जाता है।

सृजनशीलता के द्वारा छात्र–छात्राओं में नवीनता लोचशीलता, धाराप्रवाहिता, मौलिकता, विस्तारण की क्षमता विकसित होती है। धाराप्रवाहिता से अभिप्राय किसी दी गई समस्या पर विचारों एवं अनुक्रियाओं को प्रस्तुत करने से होता है। जिसके अन्तर्गत 4 प्रमुख प्रवाह वैचारिक प्रवाह, अभिव्यक्ति प्रवाह, साहचर्य प्रवाह तथा शब्द प्रवाह सम्मिलित होता है। वैचारिक प्रवाह के अन्तर्गत विचारों के स्वतन्त्र प्रस्फुटन को प्रोत्साहित किया जाता है, जैसे–किसी कहानी के अनेक शीर्षक बताना, किसी वस्तु के अनेक उपयोग बताना आदि। अभिव्यक्ति प्रवाह में मानवीय अभिव्यक्तियों के स्वतन्त्र उत्पत्ति को प्रोत्साहित किया जाता है, जैसे–दिये गये कुछ शब्दों से वाक्य बनाना। साहचर्य प्रवाह के अन्तर्गत शब्दों या वस्तुओं में परस्पर साहचर्य स्थापित किया जाता है। जबकि शब्द प्रवाह में दिये गये प्रत्ययों एवं उपसर्गों से नये शब्द बनाना होता है।

सृजनशीलता के अन्तर्गत विविधता से अभिप्राय किसी समस्या पर दिये गये उत्तरों या विकल्पों में विविधता से होता है। इससे यह ज्ञात होता है कि विभिन्न छात्र–छात्राओं के द्वारा दिये गये उत्तर या विकल्प एक दूसरे से कितने भिन्न है। मौलिकता के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं के द्वारा प्रस्तुत उत्तरों या विकल्पों का असामान्य अथवा अन्य छात्र–छात्राओं के उत्तरों से अलग होने से लगाया जाता है इसके द्वारा छात्र–छात्राओं के द्वारा दिये गये उत्तर किस प्रकार एक दूसरे से भिन्न है। इसकी जानकारी प्राप्त की जाती है। दूसरे शब्दों में मौलिकता विशेष रूप से नवीनता से सम्बन्धित होती है। छात्र–छात्राओं के द्वारा दिये गये उत्तर यदि अन्य लोगों के द्वारा दिये गये उत्तरों से भिन्न है तो उसे मौलिक कहा जा सकता है जैसे किसी वस्तु के नये उपयोग बताना, किसी कहानी या कविता के शीर्षक बताना आदि, जबकि विस्तारण के अन्तर्गत विभिन्न भावों एवं विचारों की विस्तृत व्याख्या करना अथवा गहन प्रस्तुतीकरण करना होता है। इसके अन्तर्गत दो भाग शाब्दिक विस्तारण एवं आकृति विस्तारण होता है। शाब्दिक विस्तारण के अन्तर्गत किसी संक्षिप्त क्रिया घटना कार्य या परिस्थिति को विस्तृत रूप से प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। जबकि आकृति विस्तारण में किसी अपूर्ण चित्र में कुछ नवीन जोड़कर उसे अधिक सार्थक बनाना होता है।

शैक्षिक उपलब्धि और सृजनशीलता मानव के बौद्धिक विकास के दो प्रमुख आयाम है। शैक्षिक उपलब्धि छात्र–छात्राओं के द्वारा औपचारिक शिक्षा के माध्यम से अर्जित ज्ञान, कौशल और योग्यता को प्रदर्शित किया जाता है। जबकि सृजनशीलता छात्र–छात्राओं में नवीन, मौलिक और उपयोगी परिकल्पनाओं विचारों एवं समाधानों को

उत्पन्न करती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इन दोनों मनोवैज्ञानिक चरों के पारस्परिक संबंधों को समझना अत्यन्त आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना ही नहीं है बल्कि छात्र–छात्राओं में सोचने, समझने, विश्लेषण करने एवं नवीन समाधान खोजने की क्षमता का विकास करना है। इस दृष्टिकोण से सृजनशीलता को शिक्षा की आत्मा कहा जा सकता है सृजनशीलता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रत्यक्ष एवं गहरा प्रभाव पड़ता है सृजनशील विद्यार्थी न केवल बेहतर ढंग से सीखते है बल्कि अपने ज्ञान को प्रभावी ढंग से प्रयोग भी करते है। सृजनशीलता छात्र–छात्राओं को अपने विषयवस्तु को नवीन दृष्टिकोण से देखने, अध्ययन करने, प्रश्न करने और प्रयोग करने के लिए प्रेरित करती है। शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनशीलता के मध्य पाये जाने वाले सम्बन्धों को दो प्रमुख बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है–

- शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनशीलता का प्रमुख प्रभाव
- सृजनशीलता पर शैक्षिक उपलब्धि का प्रमुख प्रभाव

6. छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर सृजनशीलता का प्रभाव

शिक्षा का उद्देश्य केवल पाठ्य पुस्तकों के ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास बौद्धिक भावनात्मक, सामाजिक एवं नैतिकता का निर्माण करना है। इस सन्दर्भ में सृजनशीलता (Creativity) शिक्षा का एक अनिवार्य घटक बन जाती है। सृजनशीलता व्यक्ति को नई सोच, नवीन दृष्टिकोण, समस्या–समाधान क्षमता और मौलिक अभिव्यक्ति की शक्ति प्रदान करती है। जब सृजनशीलता शिक्षा प्रक्रिया से जुड़ती है, तब उसका सीधा और सकारात्मक प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि (Academic Achievement) पर पड़ता है।

(i) बौद्धिक विकास में वृद्धि– सृजनशीलता विद्यार्थियों की सोच को लचीला, विश्लेषणात्मक और तार्किक बनाती है। विद्यार्थी केवल याद करने तक सीमित नहीं रहते है, वह तथ्यों का विश्लेषण, तुलना और मूल्यांकन करना सीखते है। इससे सीखने की गुणवत्ता बढ़ती है। जो शैक्षिक उपलब्धि को ऊँचा उठाती है।

(ii) समस्या समाधान क्षमता का विकास– सृजनशील विद्यार्थी समस्याओं को चुनौती के रूप में देखते है, बाधा के रूप में नहीं देखते है। गणितीय, समस्याएँ, वैज्ञानिक प्रयोग, सामाजिक एवं व्यावहारिक समस्याएँ इन सभी में वह नवीन समाधान खोजते है। इससे परीक्षा एवं जीवन–उन्मुख शिक्षा में सफलता मिलती है।

(iii) सीखने में रूचि और जिज्ञासा का विकास– सृजनशीलता जिज्ञासा को जन्म देती है। 'क्यों', 'कैसे', यदि ऐसा हो तो? जैसे– प्रश्न विद्यार्थी को सक्रिय शिक्षार्थी बनाते है रूचि बढ़ने से पढ़ाई बोझ नहीं बल्कि आनन्द बन जाती है जिससे उपलब्धि स्तर बढ़ता है।

(iv) आत्मविश्वास और आत्माभिव्यक्ति में वृद्धि– जब विद्यार्थी अपने विचार स्वतन्त्र रूप से व्यक्त करते है निबन्ध, वाद–विवाद, प्रोजेक्ट प्रस्तुति तो उनमें आत्मविश्वास विकसित होता है। आत्मविश्वासी विद्यार्थी परीक्षा, मंच और प्रतिस्पर्धा में बेहतर प्रदर्शन करते है।

(v) स्मरण शक्ति एवं समझ में सुधार– सृजनशील शिक्षण विधियाँ गतिविधि आधारित शिक्षा, परियोजना कार्य, प्रयोग और चित्रण ज्ञान को स्थायी बनाती हैं। रटने के बजाय समझने से दीर्घकालिक शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त होती है।

(vi) भाषा और संप्रेषण कौशल का विकास– सृजनशीलता से शब्द भण्डार बढ़ता है, विचारों की स्पष्टता आती है। लेखन एवं व्यक्तित्व कौशल विकसित होता है। इससे भाषा विषयों के साथ–साथ सभी विषयों में प्रदर्शन सुधरता है।

(vii) **नवाचार और मौलिकता को प्रोत्साहन–** सृजनशील विद्यार्थी नकल नहीं करते, बल्कि स्वयं खोजते है जैसे नये प्रयोग, नये विचार, नई प्रस्तुतियाँ। यह मौलिकता उन्हें शैक्षणिक प्रतियोगिताओं शोध और उच्च अध्ययन में आगे बढ़ाती है।

(viii) **आलोचनात्मक एवं चिंतनशील सोच का विकास–** सृजनशीलता केवल सृजन ही नहीं, बल्कि आलोचनात्मक चिंतन भी सिखाती है। तथ्य और मत में अन्तर, सही–गलत का विवेचन, तर्क संगत निष्कर्ष। इससे उत्तरों की गुणवत्ता बेहतर होती है और अंक वृद्धि होती है।

(ix) **भावनात्मक सन्तुलन और तनाव में कमी–** सृजनात्मक गतिविधियाँ कला, संगीत, लेखन, नाटक आदि विद्यार्थियों के मानसिक तनाव को कम करती है। तनाव–मुक्त विद्यार्थी परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते है।

(x) **जीवन कौशल एवं व्यावहारिक ज्ञान का विकास–** सृजनशील शिक्षा जीवन से जुड़ी होती है निर्णय क्षमता, नेतृत्व, सहयोग, समय प्रबन्धन। यह सभी कौशल शैक्षिक उपलब्धि के साथ–साथ भविष्य की सफलता सुनिश्चित करते है।

(xi) **शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्धों में सुधार–** जब शिक्षक सृजनशीलता को प्रोत्साहित करते है खुला वातावरण, प्रश्न पूंछने की स्वतन्त्रता तो विद्यार्थी भय मुक्त होकर सीखते है। सकारात्मक वातावरण शैक्षिक परिणामों को बेहतर बनाता है।

(xii) **समग्र व्यक्तित्व विकास–** सृजनशीलता से केवल अंक ही नहीं बढ़ते है, बल्कि सोच संवेदनशीलता, सामाजिक जिम्मेदारी आदि का भी विकास होता है यही समग्र–विकास उच्च शैक्षिक उपलब्धि का आधार बनता है।

स्पष्ट है कि सृजनशीलता एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच गहरा, सकारात्मक और परस्पर पूरक सम्बन्ध है। सृजनशीलता शिक्षा को जीवन्त, प्रभावी और उद्देश्यपूर्ण बनाती है। यदि विद्यालय शिक्षक और पाठ्यक्रम सृजनशीलता को उचित स्थान दें, तो विद्यार्थी केवल अच्छे अंक ही नहीं बल्कि सक्षम, नवाचारी और आत्मनिर्भर नागरिक बन सकते है। अतः आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सृजनशीलता को केन्द्रीय स्थान देना समय की अनिवार्य आवश्यकता है।

7. छात्र–छात्राओं के सृजनशीलता पर शैक्षिक उपलब्धि का प्रमुख प्रभाव

शिक्षा और सृजनशीलता मानव विकास के दो अत्यन्त महत्वपूर्ण आयाम है। सामान्यतः सृजनशीलता को शैक्षिक उपलब्धि का कारण माना जाता है, परन्तु इसके विपरीत शैक्षिक उपलब्धि भी सृजनशीलता को गहराई से प्रभावित करती है। जब विद्यार्थी ज्ञान, कौशल, अनुभव और आत्मविश्वास प्राप्त करता है, तब उसकी सृजनात्मक क्षमता विकसित होती है। इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि सृजनशीलता की आधारशिला, पोषक तत्व और दिशा–निर्देशक के रूप में कार्य करती है।

(i) **ज्ञान में वृद्धि से सृजनशीलता में वृद्धि–** उच्च शैक्षिक उपलब्धि से विद्यार्थी का ज्ञान भण्डार समृद्ध होता है। विविध विषयों का अध्ययन, तथ्यों और सिद्धांतों की समझ जितना अधिक ज्ञान, उतनी अधिक विचार–संभावनाएँ जिससे सृजनशीलता का विकास होता है।

(ii) **बौद्धिक परिपक्वता का विकास–** शैक्षिक उपलब्धि से तार्किक चिन्तन, विश्लेषण क्षमता, तुलनात्मक दृष्टिकोण आदि विकसित होता है। यह बौद्धिक परिपक्वता सृजनशील सोच की मजबूत नींव बनती है।

(iii) **आत्मविश्वास में वृद्धि–** अच्छी शैक्षिक उपलब्धि आत्म–सन्तोष, आत्मगौरव, स्वयं पर विश्वास आदि को जन्म देती है। आत्मविश्वासी व्यक्ति अपने विचारों को निडर होकर व्यक्त करता है जिससे सृजनशीलता फलती–फूलती है।

(iv) **अभिव्यक्ति कौशल का विकास–** शिक्षा से भाषा दक्षता, लेखन क्षमता, प्रस्तुति कौशल आदि विकसित होते है। प्रभावी अभिव्यक्ति के बिना सृजनशीलता अधूरी रहती है।

(v) **कल्पनाशक्ति को दिशा मिलना–** शिक्षा कल्पना को असीम नहीं, बल्कि उद्देश्यपूर्ण बनाती है यथार्थ से जोड़ती है। शिक्षित कल्पना रचनात्मक और उपयोगी होती है।

(vi) **समस्या समाधान क्षमता का विकास–** शैक्षिक उपलब्धि से विद्यार्थी–वैज्ञानिक विधि, तर्कसंगत सोच आदि प्रयोगात्मक दृष्टिकोण सीखता है। इससे उसकी सृजनशीलता व्यावहारिक बनती है।

(vii) **आलोचनात्मक चिंतन का विकास–** उच्च शिक्षा विद्यार्थी को प्रश्न पूँछना, तर्क करना, मूल्यांकन करना आदि सिखाती है। यह आलोचनात्मक चिन्तन सृजनशीलता को गहराई प्रदान करता है।

(viii) **नवाचार की प्रवृत्ति का विकास–** शैक्षिक उपलब्धि शोध प्रवृत्ति प्रयोगशीलता खोज की भावना आदि को जन्म देती है। नवाचार सृजनशीलता का सर्वोच्च रूप है।

(ix) **सामाजिक एवं सांस्कृतिक समझ में वृद्धि–** शिक्षा से सामाजिक समस्याओं की समझ तथा सांस्कृतिक विविधता का ज्ञान होता है। यह समझ साहित्य, कला और विचारों में नई संवेदनशीलता लाती है।

(x) **भावनात्मक संतुलन का निर्माण–** शिक्षा व्यक्ति को धैर्य, सहनशीलता, आत्म–नियंत्रण आदि सिखाती है। भावनात्मक संतुलन सृजनशीलता के लिए अनुकूल वातावरण बनाता है।

(xi) **अवसरों की उपलब्धता–** अच्छी शैक्षिक उपलब्धि से मंच संसाधन, मार्गदर्शन आदि मिलता है। अवसर मिलने पर सृजनशीलता प्रकट और विकसित होती है।

(xii) **अनुशासन और निरंतरता का विकास–** शिक्षा–अभ्यास, समयबद्धता, लक्ष्य–निर्धारण आदि सिखाती है सृजनशीलता केवल प्रेरणा से नहीं, बल्कि अनुशासन से भी विकसित होती है।

(xiii) **सृजनशील जोखिम उठाने की क्षमता–** शैक्षिक रूप से सक्षम व्यक्ति असफलता से नहीं डरता है, प्रयोग करने का साहस रखता है, यही साहस सृजनशीलता की आत्मा है।

(xiv) **उच्च स्तरीय सोच (Higher Order Thinking)–** उच्च शिक्षा–संश्लेषण, मूल्यांकन, नव–निर्माण आदि को बढ़ावा देती है। यह सोच सृजनशीलता को उच्चतम स्तर पर ले जाती है।

स्पष्ट है कि शैक्षिक उपलब्धि सृजनशीलता को जन्म देने, पोषित करने और दिशा देने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा सृजनशीलता को न केवल ज्ञान का आधार प्रदान करती है, बल्कि उसे उद्देश्य, आत्मविश्वास और सामाजिक उपयोगिता भी देती है अतः यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक उपलब्धि और सृजनशीलता परस्पर पूरक है और एक के बिना दूसरे का पूर्ण विकास सम्भव नहीं है।

8. निष्कर्ष

शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनशीलता के मध्य अत्यन्त गहरा, बहुआयामी, परस्पर आश्रित एवं गतिशील सम्बन्ध पाया जाता है। आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षाशास्त्र दोनों इस तथ्य को स्वीकार करते है कि शैक्षिक उपलब्धि केवल पुस्तकीय ज्ञान, स्मरणशक्ति अथवा परीक्षा के अंकों तक सीमित नहीं होती है बल्कि यह छात्र–छात्राओं के सोचने समझने, विचार करने, विश्लेषण एवं तर्क करने, समस्या समाधान करने एवं नवीन विचारों

का सृजन करने की क्षमता का समग्र परिणाम होता है। छात्र–छात्राओं में इस क्षमता के विकास में सृजनशीलता अत्यन्त आवश्यक है।

सृजनशीलता वह मनौवैज्ञानिक शक्ति है जो छात्र–छात्राओं को नवीन दृष्टिकोण अपनाने, जटिल समस्याओं के समाधान खोजने एवं मौलिक विचार प्रस्तुत करने में सक्षम बनाती है। जब कोई एक छात्र–छात्रा सृजनशील होता है। तो वह केवल विषयवस्तु को रटने के बजाय उसे समझने, विचार करने और जीवन से संबंधित करने का प्रयास करता है। इससे उसके सीखने की क्षमता अधिक प्रभावी, अर्थपूर्ण एवं स्थायी होता है। जिससे छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है। शैक्षिक वातावरण भी सृजनशीलता के विकास में सहायक होता है ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमें समूहचर्या, कार्ययोजना, प्रश्न पूँछने की स्वतन्त्रता, खोज आधारित अधिगम एवं नवीन विचारों को प्रोत्साहित करते है। तो छात्र–छात्राओं में सृजनशीलता बढ़ती है। यदि छात्र–छात्राओं को अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है, तो उनकी सृजनशीलता की क्षमता का विकास होता है और उनकी शैक्षिक उपलब्धि में भी सुधार होता है। जबकि केवल परीक्षा आधारित, रटने पर बल देने वाली एकांगी शिक्षा प्रणाली छात्र–छात्राओं की सृजनशीलता की क्षमता को सीमित कर सकती है। सृजनशीलता आधारित शिक्षा प्रणाली छात्र–छात्राओं में स्वतन्त्र चिन्तन, निर्णय की क्षमता, कल्पनाशीलता, जिज्ञासा तथा आत्मविश्वास की क्षमता विकसित करती है। छात्र–छात्राओं में यह विशेषताएँ शैक्षिक सफलता के साथ–साथ वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान में भी सहायक होती है।

उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनशीलता दोनों एक दूसरे के पूरक एवं संवर्धक मनोवैज्ञानिक चर है। प्रभावी एवं प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली छात्र–छात्राओं के सृजनशीलता की क्षमता में वृद्धि करती है। जबकि सृजनशीलता छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि को नवीन प्रतिमान प्रदान करती है। शिक्षा का उद्देश्य छात्र–छात्राओं को केवल सफल परीक्षार्थी बनाना ही नहीं है बल्कि तार्किक, आत्मनिर्भर, नवोन्मेषी, सृजनशील एवं प्रजातांत्रिक नागरिक के रूप में विकसित करना होता है। जिससे छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि को स्थायी एवं समाज के सर्वांगीण विकास को सम्भव बनाया जा सकता है।

9. सन्दर्भ ग्रन्थसूची–

- मिश्र, सुधीर (2019) उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, शिक्षक शिक्षा विभाग, डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।
- यादव, नूपुर (2019) अयोध्या जनपद के माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम का छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक रूचि तथा समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, शिक्षक शिक्षा विभाग, डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।
- सिंह, डी.पी. (2019) शिक्षा में नवाचार और सृजनात्मकता, एपीएच पब्लिशिंग, नई दिल्ली।
- यादव, आर.के. (2018) अधिगम प्रक्रिया और सृजनात्मकता, एपीएच पब्लिशिंग, नई दिल्ली।
- शुक्ला, एम.पी. (2018) सृजनात्मक शिक्षण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- त्रिपाठी, के.के. (2018) शिक्षा में उपलब्धि परीक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- यादव, बी.एल. (2017) छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के निर्धारक, प्रगति प्रकाशन, लखनऊ।
- तिवारी, एस.के. (2017) रचनात्मक चिंतन और विकास, प्रगति प्रकाशन, लखनऊ।

- मिश्रा, बी.के. (2017) शैक्षिक उपलब्धि का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, प्रगति प्रकाशन, लखनऊ।
- तिवारी, ए.डी. (2016) शिक्षा और सृजनात्मकता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
- गुप्ता, आर.एल. (2016) सृजनात्मकता का मनोविज्ञान, एपीएच पब्लिशिंग, नई दिल्ली।
- वर्मा, एस.पी. (2016) शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
- मिश्रा, आर.एन. (2015) रचनात्मकता और शिक्षा, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- पांडेय, आर.एस. (2015) अधिगम और उपलब्धि, शारदा प्रकाशन, इलाहाबाद।
- राय, पारसनाथ (2015) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
- गुप्ता, एस0 पी0 (2015) अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि, शारदा पुस्तक भवन प्रकाशन, इलाहाबाद।
- गुप्ता, एस0 पी0 (2015) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान–सिद्धान्त एवं व्यवहार, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
- सिंह, कुमार अरुण (2015) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, इलाहाबाद।
- त्रिपाठी, एस.एन. (2015) शिक्षा में मनोवैज्ञानिक मापन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- सिंह, उदय (2015) माध्यमिक स्तर के आवासीय तथा गैर आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, शिक्षक शिक्षा विभाग, डॉ०राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।
- सिंह, एस.पी. (2015) अधिगम और शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- गुप्ता, एस.के. (2014) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- पाठक, आर.पी. (2013) शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धांत, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
- शर्मा, आर.ए. (2012) शिक्षा मनोविज्ञान, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
- वर्मा, पी.पी. (2011) शिक्षा में अनुसंधान की विधियाँ, अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
- अग्रवाल, जे.सी. (2010) शैक्षिक मनोविज्ञान, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- पाल, के0 एस0 एवं गुप्त, नरायण लक्ष्मी, मोहन मदन (2007) शिक्षा मनोविज्ञान, न्यू कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद।
- गुप्ता, एस0 पी0 (2007) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन प्रकाशन, इलाहाबाद।
- पाण्डेय, प्रसाद कामता (2006) शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.